CTBC's

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Special Issue on

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

Volume : 2 / Issue : 3 (Special Issue)
January 2015

Website : www.ctboracollege.edu.in
Email : ctbcsirj@gmail.com

Scanned by CamScanner

CTBC's INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL (CTBC'sIRJ)

CTBC's International Research Journal (CTBC'sIRJ), is a half-yearly, multidisciplinary, peer-reviewed journal. It endeavors to bring qualitative research work, case studies, review papers, short communications in the field of Arts & Humanities, Languages, Social Sciences, Physical Sciences, Chemical Sciences, Life Sciences, Mathematical Sciences, Computer Science, Commerce to the notice of teachers, researchers, students, and others interested in the field. The papers submitted to the CTBC'sIRJ are subjected to blind peer evaluation by eminent experts in the respective discipline. Articles submitted should be in English or Hindi or Marathi.

Patrons:

Hon. Shri. Rasiklalji M. Dhariwal
Chairman, College Governing Council and all the members of College Governing Council

EDITORIAL BOARD

Chief-Editor

Prof. N.S. Nikam, Principal & Head, Department of History & AIHCA, C.T.Bora College, Shirur.

Co-Editors

Prof. Dr.S.V. Sowani, Associate Professor & Head, Department of Economics, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr.V.V. Awati, Associate Professor & Head, Department of Physics, C.T.Bora College, Shirur.

Members

Prof.Dr.B. R. Khot, Associate Professor & Head, Department of Chemistry, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. R.E. Kothawade, Associate Professor & Head, Department of Commerce, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr.B.R. Lalit, Associate Professor & Head, Department of Marathi, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr.J. Nair, Associate Professor, Department of English, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. P.P. Prabhune, Assistant Professor, Department of History, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr. (Mrs.) R.S. Jadhav, Assistant Professor, Department of Geography, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr.I.J. Pawar, Assistant Professor & Head, Department of Hindi, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Dr.N.M. Ghangaokar, Assistant Professor, Department of Botany, C.T.Bora College, Shirur.

Prof. Ms.S.S. Sengupta, Librarian & Head, Department of Library & Information Science, C.T.Bora College, Shirur.

ADVISORY BOARD

Prof. Ram Takwale, Ex-VC Savitribai Phule Pune University, Pune

Prof.Uttamrao Bhoite, Ex-VC, YCMOU, Nasik.

Prof.Dr.Pandit B. Vidyasagar, Vice-Chancellor, SRTMU, Nanded.

Dr.Vivek Sawant, Executive Director, MKCL, Pune.

Disclaimer

The Editors or Publisher is not responsible for ideas/views expressed by the authors of the articles.

© ***2014, C.T.Bora College, Shirur, Dist.Pune, Maharashtra.***

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(बी.सी.यु.डी. सावित्रिबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग से)

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

(१६, १७ जनवरी, २०१५)

शोध आलेख

संपादक

डॉ. ईश्वर पवार

सह संपादक

डॉ. प्रमोद पडवळ

प्रा. सौ. सुधा जैन

डॉ. संतोष दंडवते

हिंदी विभाग

शिरूर शिक्षण प्रसारक मंडल संचलित

चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय शिरूर,

जि. पुणे, महाराष्ट्र

नॅक पुनर्मानांकन 'अ' श्रेणी

Email :- ctborainfo68@gmail.com ; Website : www.ctboracollege.edu.in

Scanned by CamScanner

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

ISSN 2350-0905

मुद्रक एवं प्रकाशक

मा. प्राचार्य

चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरुर,

जि. पुणे, महाराष्ट्र (भारत)

दूरध्वनि क्र. ०२१३८ २२२३०१, २२४१७०

वेब : www.ctboracollege.edu.in

ई–मेल : ctborainfo68@gmail.com

ctborainfo@rediffmail.com

संस्करण : २०१५

मूल्य : २५० रूपए

© चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरुर, जि. पुणे, महाराष्ट्र (भारत)

Edition : 2015

Price : Rs. 250

- Research Papers published in this Special Issue are not Peer-Reviewed
- प्रस्तुत विशेषांक में प्रकाशित शोध आलेखों में दिए गए विचार, कल्पना संबंधित लेखकों की है। इनसे संपादक मंडल सहमत हो यह आवश्यक नहीं है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

१	मीडिया और भाषा का अवकाश	डॉ. विजय गाडे	१
२	आज के मीडिया का भाषाई खेल	डॉ. प्रोमिला	६
३	हिंदी साहित्य में पत्रकारिता की भूमिका	के. व्ही. कृष्णमोहन	९
४	साहित्य, समाज और सिनेमा का अंत:संबंध	डॉ. शाकिर शेख डॉ. बाबा शेख	११
५	विज्ञापनों में हिंदी	डॉ. सिध्देश्वर गायकवाड	१३
६	पत्रकारिता और हिंदी	डॉ. भारत खिलारे	१६
७	संचार माध्यमों में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	डॉ. लक्ष्मण भोसले	२१
८	हिंदी भाषा वाया बायपास इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	डॉ. ईश्वर पवार	२४
९	विविध संचार माध्यम और हिंदी	प्रा. दशरथ वाघ	२६
१०	वेब मीडिया का समष्टिगत परिदृश्य	डॉ. भाऊसाहेब नवले	३०
११	दूरदर्शन और हिंदी भाषा	प्रा. साहेबराव गायकवाड	३४
१२	पत्रकारिता और हिंदी	डॉ. शिवाजी सांगोळे	३७
१३	प्रसार माध्यमों में हिंदी की भूमिका	डॉ. मीरा निचळे	४०
१४	विविध संचार माध्यम और हिंदी	डॉ. संतोष दंडवते	४२
१५	संचार माध्यम और हिंदी की उपयुक्तता	प्रा. दिलीप पाटील	४५
१६	दूरदर्शन और हिंदी	डॉ. सुरेश शिंदे	४७
१७	संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका	डॉ. अनुपमा प्रभुणे	५०
१८	संचार माध्यम और हिंदी	डॉ. प्रमोद पडवळ	५३
१९	हिंदी के प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों का योगदान	डॉ. बाबासाहेब माने	५७
२०	विविध संचार माध्यम और हिंदी	डॉ. ए. जे. बेवले	६१
२१	हिंदी सिनेमा और हिंदी भाषा	डॉ. अमरजा रेखी	६५
२२	जनसंचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका	डॉ. जालिंदर इंगले	६७
२३	दूरदर्शन और हिंदी	डॉ. संतोष रायबोले	६९
२४	हिंदी के प्रचार–प्रसार में सिनेमा का योगदान	डॉ. बबन चौरे	७२
२५	मीडिया और भूमंडलीकरण	डॉ. पंडित बन्ने	७५
२६	पत्रकारिता और हिंदी	डॉ. अर्चना आढाव	७८
२७	विज्ञापनों में हिंदी	डॉ. भरत शेणकर	८०

Scanned by CamScanner

हिंदी के प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों का योगदान

जब हम हिंदी के प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों के योगदान पर विचार करने लगते हैं तो कई बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि संचार माध्यमों का हिंदी के प्रचार–प्रसार में निश्चित रुप से बड़ा योगदान है। इसे नकारा नहीं जा सकता। परंतु परिनिष्ठित हिंदी का जितना प्रचार–प्रसार हिंदी साहित्य के माध्यम से हुआ है, उतना संचार माध्यमों के द्वारा नहीं हुआ है। यह भी एक तथ्य है, इसे भी कोई नकार नहीं सकता है। दूसरी ओर यह भी बात सामने आती है कि प्रिंट मीडिया में दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, दैनिक हिंदुस्तान आदि समाचार पत्र तथा अन्य ज्यों साहित्यिक पत्रिकाएँ निकलती हैं, उनके द्वारा शुद्ध एवं साहित्यिक हिंदी का अधिक प्रचार हुआ है और यह सिलसिला आज भी जारी है। परंतु इन समाचार पत्रों में ऐसे भी कई समाचार पत्र है, जो अंग्रेजी शब्दों से युक्त हिंदी का अधिक प्रयोग कर रहे है। यह थोडी–सी खटकने वाली बात है। इनमें हम नवभारत टाईम्स, आज का आनंद, यशोभूमि जैसे समाचार पत्रों में शामिल कर सकते है। इसका यह अर्थ निकाला नहीं जाना चाहिए कि इन समाचार पत्रों का योगदान हिंदी के प्रचार–प्रसार में बहुत कम है। इनका भी योगदान उतना ही बड़ा है, जितना की शुद्ध हिंदी का प्रयोग करनेवाले समाचार पत्रों का है। फर्क केवल भाषा की शुद्धता एवं अशुद्धता का है। तीसरी बात यह है कि जब हम इलेक्ट्रानिक मीडिया की ओर देखते हैं, तो उसके बारे में भी यही कह सकते हैं कि उसमें भी उसी तरह का अंतर नजर आता है। जिस तरह का अंतर प्रिंट मीडिया में नजर आता है। दूरदर्शन जो राष्ट्रीय चैनल है, उसमें शुद्ध हिंदी का प्रयोग होता है और अन्य चैनलों में काम चलाऊ तथा विविध भाषाओं के शब्दों से युक्त हिंदी का प्रयोग होता है। यें बातें भले ही विवादास्पद हो, परंतु एक बात निश्चित तौर पर सही है कि संचार माध्यमों के द्वारा, हिंदी का प्रचार–प्रसार तेजी से हुआ है और आगे भी होता रहेगा। जैसे सर्वविदीत है कि संचार के अनेक माध्यम हैं, जिनकी बदौलत हिंदी आज भारत में ही नहीं, लगभग संपूर्ण विश्व में पहुँच चुकी है। इन्हीं माध्यमों के कारण वह वैश्विक भाषा बनने की अधिकारिणी बन गई है। संचार के विविध माध्यमों में हम 'रेडियो', 'टी.वी', 'फिल्म', 'कंप्यूटर', 'इंटरनेट', 'वेब' तथा 'मोबाईल', आदि के योगदान पर बात कर सकते हैं। इन माध्यमों के फलस्वरुप हिंदी भाषा भारत के कोने–कोने में बसे केवल भारतवासियों के ही दिलों में नहीं, अपितु विश्वभर के विविध मानव समुदायों के दिलों में रच–बस गई है। फिर चाहे उसका रुप शुद्ध रहा हो या काम चलाऊ अथवा विविध भाषाओं के शब्दों से युक्त ही क्यों न रहा हो? पर एक बात सत्य है कि संचार माध्यमों के योगदान के फलस्वरुप हिंदी भाषा दुनिया के तमाम समुदायों के बीच पहुँचने में कामयाब कही जा सकती है। फिर भी दुनिया में उसका अधिकाधिक प्रचार–प्रसार करना आज भी जरुरी प्रतीत होता है। ताकि यह भाषा संपूर्ण विश्व की अपनी भाषा बन जाए।

संचार माध्यमों में हम प्रथमत: 'रेडियो' की बात करते हैं। जैसा की सर्वविदीत है कि यह एक श्राव्य माध्यम है। इस पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों को श्रोता केवल सुन सकता है, उन्हें देख नहीं पाता है। यह माध्यम भारत के घर–घर में पहुँच गया है। भले ही आज इसका महत्व टी.वी. और फिल्मों से कम हुआ हो, लेकिन आज भी यह महाविद्यालयीन छात्रों, मध्यमवर्गीय परिवारों, कंपनी और कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों, खेती में काम करने वाले श्रमिकों तथा भेड–बकरियाँ चराने वाले चरवाहों में लोकप्रिय माध्यम बना हुआ है। इस माध्यम के कई हिस्से है, जो रात–दिन लोगों का मनोरंजन तो करते ही हैं, साथ ही उन्हें ज्ञान–विज्ञान की अनेक बातों से भी परिचित करते रहते हैं। एक समय था, जब आकाशवाणी के विविध भारती और प्रसार भारती जैसे हिंदी के रेडियों चैनलों को सुननेवाले लोगों की तादाद काफी बड़ी थी, परंतु समय–समय की बात है कि आज इनके श्रोताओं की संख्या में कमी आ चुकी है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि आकाशवाणी के इन माध्यमों से हिंदी भाषा भारत के घर–घर में पहुँच चुकी है। वह भारत के विविध राज्यों को (जो कि भिन्न–भिन्न भाषी राज्य हैं) आपस में मजबूत रुप में जोडने का कार्य कर रही है। परिणाम स्वरुप हिंदी भाषा को जानने एवं समझनेवालों की तादाद काफी बढ़ गई है।

Scanned by CamScanner

आकाशवाणी के इस युग को हम प्रारंभिक युग कह सकते हैं। इसके बाद रेडियों ने अपना विकास अधिक मात्रा में किया है। जिसकी वजह से आज भारतवर्ष के बहुसंख्य राज्यों के कई छोटे–बड़े शहरों में रेडियो के कई चैनल्स शुरु हो चुके हैं, जो हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार तेजी से करने में भरपूर योगदान दे रहे हैं। महाराष्ट्र के पुणे शहर की ही अगर बात की जाए तो पता चलता है कि केवल इस अकेले शहर में लगभग पाँच से अधिक रेडियों के एफ. एम. माध्यम हैं, जों हिंदी भाषा के कार्यक्रमों को प्रसारित करते हैं। जिनमें आकाशवाणी के १०१.१ एफ.एम. माध्यम के अतिरिक्त ९१.१ एफ.एम., ९८.३ एफ.एम., ९३.५ एफ. एम., ९४.३ एफ.एम. आदि को शामिल किया जा सकता है। इसी तरह से भारत के लगभग हर छोटे–बडे शहर में रेडियो के कई चैनलों के द्वारा हिंदी भाषा के कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। ये चैनल्स हिंदी भाषा को सुशिक्षित–अशिक्षित, अमीर–गरीब, किसान–मजदूर, प्रशासक–कर्मचारी आदि सभी के पास पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। परंतु इनकी भाषा शुद्ध हिंदी नहीं होती है। उसमें कभी अंग्रेजी तो कभी मराठी, कभी गुजराती तो कभी पंजाबी आदि कई भाषाओं के शब्दों का मिश्रण निहित होता है। इन माध्यमों की हिंदी भाषा अपने श्रोतावर्ग के अनुसार होती है। जैसे भी हो, इन चैनलों के कारण हिंदी भाषा हर राज्य में पहुँच गई है। इन चैनलों पर प्रसारित होनेवाले गीत, समाचार, हास्य–विनोद तथा अपने–अपने शहरों की ताजा खबरों के कारण इन्हें सुनने वाले श्रोताओं की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है। अधिकाधिक संख्या में श्रोतावर्ग इनसे जुड़ने लगा है। इसका फायदा हिंदी के प्रचार–प्रसार में हो रहा है।

जैसे हम रेडियों चैनलों के द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में बढोत्तरी देख पा रहे हैं। वैसी ही 'टी.वी.' के विविध चैनलों के द्वारा भी देख सकते हैं कि जिन्होंने रेडियों से भी कई अधिक मात्रा में हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया है। टी.वी. दृश्य–श्राव्य माध्यम होने के कारण इसे देखने एवं सुननेवालों की तादाद केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर भी काफी बढ़ गई है और इसमें लगातार इजाफा हो रहा है। आज पूरे भारत में टी.वी. के असंख्य चैनल्स ऐसे है, जों भिन्न–भिन्न क्षेत्रों का ज्ञान देते हैं। जैसे कि आस्था, संस्कार, अरिहंत आदि चैनल्स संस्कार एवं अध्यात्म की जानकारी हिंदी भाषा के जरिए देते हैं। झी–सिनेमा, झी–ॲक्शन, सोनी मॅक्स, झी–क्लासिक, मुवीज–ओके, यूटीवी–मुवीज, यूटीवी–ॲक्शन, स्टार गोल्ड, दंगल, दबंग आदि टी. वी. चैनल्स कई नए–पुराने हिंदी फिल्मों तथा दूसरी भाषाओं के फिल्मों को हिंदी में अनुदित करके प्रसारित करते हैं। परिणाम में हिंदी तथा अन्य भाषाओं के प्रसिद्ध फिल्मों को देखने का अच्छा अवसर दर्शकों को प्राप्त होता है और दर्शक भी इनका आनंद बडे चाव से लेते हैं। साथ ही हिंदी भाषा से भी परिचित हो जाते हैं। अत: एक तरह से हिंदी का प्रचार–प्रसार होने में मदद मिलती है। दूसरी ओर कई ऐसे भी चैनल्स हैं, जिनमें केवल हिंदी धारावाहिकों का प्रसारण होता है। इनमें झी–अनमोल, झी–प्रिमिअम, स्टार–प्लस, सोनी सब, सोनी पल, आदि चैनल्स को शामिल किया जा सकता है। इन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिकों की वजह से कई अहिंदी भाषी लोगों ने हिंदी सीखी है। इनके अतिरिक्त निक, सीएन, पैगो, जैसे टी. वी. चैनलों के द्वारा कार्टुन्स दिखाए जाते हैं, जिनकी भाषा हिंदी होती है। इन कार्यक्रमों के द्वारा बच्चों को कई तरह के लाभ मिलते हैं। एक तो कार्टुन्स देखने से बच्चों को आनंद तो मिलता ही है, साथ ही वें वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारी से भी वाकिफ हो जाते है और हिंदी भाषा से भी उनका नाता जुड़ जाता है। इसी कारणवश कार्टुन्स देखनेवाले बच्चे हिंदी सीखने एवं बोलने में माहिर बनते जा रहे है। इन चैनलों के अलावा शेअर बाजार की जानकारी हिंदी में देनेवाला सीएनबीसी आवाज़ नामक चैनल है। अत: जिन लोगों की रुचि शेअर बाजार में है, उन्हें आसानी से शेअर मार्केट का ताजा हाल हिंदी भाषा के माध्यम से प्राप्त होता है । परिणाम स्वरुप शेअर मार्केट में रुचि रखने वाले लोगों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ती ही जा रही है। इसका फायदा भाषा के प्रचार–प्रसार में भी अधिक हो रहा है। इन चैनलों के साथ ही वन्य जीवों, सागरी प्राणियों और वनस्पतियों, देश–दूनिया के विविध उद्योगों, इतिहास, आदि विविध क्षेत्रों की घटनाओं को दिखानेवाले डिसकवरी, ॲनिमल प्लैनेट, हिस्ट्री जैसे कई चैनल्स हैं, जिनकी वजह से हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में लाभ हो रहा है। इन चैनलों के साथ ही नए तथा पुराने गीतों का प्रसारण करनेवाले बिंदास, बीफोरयू, झी–ईटीसी, एम टयून्स, जीएक्सएम,

Scanned by CamScanner

सोनी मिक्स आदि चैनलों का नंबर आता है। अत: जिन दर्शकों की रुचि गीत एवं संगीत को सुनने और देखने में होती है, उन्हें इन चैनलों के द्वारा फायदा होता है। इनके द्वारा दिखाए जाने वाले गीत हिंदी भाषा में ही होते हैं। इसी कारण हिंदी भाषा को सीखनेवालों की संख्या में काफी बढोत्तरी हो गई है। देश और दुनिया की ताजा घटनाओं की जानकारी देनेवाले डी. डी.न्यूज, आज तक, एबीपी न्यूज, झी–न्यूज, इंडिया–टीवी आदि कई चैनल्स हैं, जो हिंदी के प्रचार–प्रसार में अधिक मात्रा में योग दे रहे हैं। खेल को प्रसारित करनेवाले स्टार स्पोर्टस् जैसे कई चैनल आते हैं। जो खेलों लाईव दिखाते हैं और उनका हाल हिंदी में सुनाते हैं। अत: खेल में अभिरुचि रखनेवाले लोग इन चैनलों को देखकर हिंदी सीखने लगे हैं। लाइफ ओके जैसे चैनल सावधान इंडिया जैसे कार्यक्रमों के द्वारा समाज में घटित सच्ची वारदातों को दिखाते हैं और ऐसी वारदातों से समाज को सावधान रहने की सलाह देते हैं। यें वारदातें काफी अचंभित करनेवाली होती है। इनका हिंदी भाषा में प्रसारण होता है। फलस्वरुप हिंदी का प्रसार अधिक हो रहा है। अन्य कई चैनलों के द्वारा नए–पुराने तथा भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के व्यंजनों को बनाने की कलाओं का भी ज्ञान मिलता है। जैसे कि गुड् टाईम और अन्य कई चैनलों पर इंडिया का स्वाद जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से पाक कला की जानकारी मिलती रहती है। यानी कि आज भारत में दर्शकों की रुचि के अनुसार विविध तरह के चैनल्स उपलब्ध हैं। दर्शक जो भी देखना चाहे वह टी. वी. पर देख सकता है और उसका आनंद ले सकता है। इससे भी हिंदी को बढ़ावा मिल रहा है। उक्त कई चैनलों पर अक्सर विविध तरह के हिंदी गीतों, फिल्मों, सांस्कृतिक गतिविधियों, काव्य–सभाओं, हास्य–व्यंग्यात्मक कार्यक्रमों आदि का प्रसारण निरंतर होता रहता है। इनके अतिरिक्त कौन बनेगा महाकरोडपति, बीग बॉस, डांस इंडिया डांस, तारक मेहता का उल्टा चश्मा, कॉमेडी विद कपिल आदि कार्यक्रम तो बहुत प्रसिद्ध हो चुके हैं। अत: ऐसे कार्यक्रमों देखने एवं उनमें हिस्सा लेने के लिए कई देश विदेश के नागरिक आते हैं और हिंदी सीखते हैं। इन कार्यक्रमों के साथ ही टी.वी. के हर चैनल पर बीच–बीच में विज्ञापनों का भी हिंदी में प्रसारण होता है। परिणाम स्वरुप हिंदी भाषा असंख्य लोगों तक पहुँच गई है। अत: टी. वी. के विविध चैनलों का हिंदी के प्रचार–प्रसार में अच्छा–खासा योगदान साबित होता है।

इसके बाद हम बात करते हैं हिंदी 'फिल्मों' की। वैसे तो हिंदी फिल्म की शुरुआत सन् १९१३ में प्रदर्शित फिल्म 'राज हरिश्चंद्र' इस मुक पट से मानी जाती है। परंतु आजादी के बाद भारतीय हिंदी फिल्मों ने विकास के एक–से–एक शिखर पादाक्रांत किए हैं। फलस्वरुप हिंदी फिल्में जों कि बॉलीवुड फिल्मों के नाम से जानी जाती हैं। उन्होंने पूरी दुनिया में हिंदी को बढ़ावा देने में अनमोल सहयोग दिया है। आज बॉलीवुड का विश्वभर में प्रचार–प्रसार हो चुका है। दुनिया में हॉलीवुड के बाद बॉलीवुड दूसरे नंबर पर जा पहुँचा है। अत: बॉलीवुड से निर्मित हिंदी फिल्मों ने दुनिया के अनेक समुदायों के बीच पहुँचने में कामयाबी हासिल की है। परिणाम स्वरुप हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर छा गई है या यूँ कह सकते है कि उसने वैश्विक स्तर पर एक विकसित एवं प्रतिष्ठित भाषा होने का गौरव प्राप्त कर लिया है। हिंदी की कई फिल्में इतनी प्रसिद्ध हो चुकी है कि उन्होंने असंख्य विदेशी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। इतना ही नहीं, उन्हें हिंदी भाषा सीखने के लिए भी मजबूर कर दिया है। अत: निश्चित् रुप में कह सकते हैं कि फिल्म क्षेत्र का योगदान हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में प्रशंसनीय रहा है। इसके पश्चात् जब हम 'कम्प्यूटर' माध्यम की ओर मुडते हैं तो ज्ञात होता है कि पूरी दुनिया में कम्प्यूटर ने हलचल मचा दी है। ऐसा माना जाने लगा है कि इक्कीसवीं सदी के जिस व्यक्ति को कम्प्यूटर का ज्ञान न हो, वह अशिक्षित है। फिर चाहे उसने शिक्षा के क्षेत्र में कितनी महारथ क्यों न हासिल की हुई हो। आखिरकार वह संगणकीय ज्ञान के बिना अधूरा माना जाने लगा है। भले ही कंप्यूटर अंग्रेजी भाषा के द्वारा खुलता और बंद होता हो, परंतु आज अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी में भी उसका परिचालन किया जा सकता है। दुनिया में कहीं भी बैठकर हम 'इंटरनेट' के द्वारा हिंदी भाषा में विविध जानकारियाँ कंप्यूटर पर हासिल कर सकते हैं। इतना ही नहीं, हिंदी भाषा में किसी दूसरे व्यक्ति को ई–मेल भेज सकते हैं। कंप्यूटर के सामने बैठकर किसी मनचाहे व्यक्ति के साथ सीधी बातचीत कर सकते हैं। आजकल ऐसे संगणकों का भी विकास किया गया है और

Scanned by CamScanner

किया जा रहा है कि जिनका परिचालन हिंदी भाषा के जरिए हो । इसकी वजह से हिंदी भाषा के फैलाव में सहयोग प्राप्त हो रहा है। 'वेब' के माध्यम से प्रदर्शित एवं प्रसारित होनेवाले हिंदी लेख, कविताएँ, शेर–शायरी, विनोद आदि का आनंद लेने के लिए कई लोगों ने हिंदी सीखी है और आज भी यह सिलसिला जारी है। वर्तमान दुनिया में 'मोबाईल' लोगों की मूल आवश्यकताओं में शामिल हो गया है। अत: मोबाईल के द्वारा भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहायता मिल गई है और आगे भी मिलती रहेगी।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि संचार के विविध माध्यमों के द्वारा हिंदी भाषा का चाहे जिस रूप में भी प्रचार–प्रसार हुआ हो और हो रहा हो, वह निश्चित रुप से गौरवान्वित करने वाली बात है। जरूरत केवल यह है कि इन माध्यमों को चलाने वाले व्यक्तियों के द्वारा शुद्ध एवं परिनिष्ठित हिंदी का प्रयोग होना चाहिए। ताकि लोगों तक परिनिष्ठत एवं मानक हिंदी भाषा पहुँच सके और वें उसे अच्छी तरह से सीख सकें। अत: यह बात निर्विवाद सत्य है कि देश और दुनिया में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों का योगदान सराहनीय है।

लेफ्ट. डॉ. बाबासाहेब भोसले
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय, जुन्नर,
जिला– पुणे

Scanned by CamScanner

The Editor
CTBC's **INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL**

C/o The Principal,
Chandmal Tarachand Bora College, Shirur, Dist. Pune
Pin - 412210 (M.S.) India
Contact : 02138 222301, 224170 Fax : 02138 - 224170
Website : www.ctboracollege.edu.in
Email : ctbcsirj@gmail.com

Scanned by CamScanner